

जगद्गुरु श्री योगानन्दाचार्य विरचित वैराग्यपचीसी

छप्पयकुण्डलियाछन्द

श्री आचारज जगद्गुरु, वन्दौ रामानन्द॥
वन्दौ रामानन्द राम सब जगत् विहारी।
भाष्यकार भगवान् विश्वतारक अवतारी॥
नश्वर सब संसार सार सोंचे सीतावर।
'योगानन्द' विचारि भजो पदकञ्ज निरन्तर॥
रवि शसि जिनकर तेज लखि, भये दीप ज्यों मन्द।
श्री आचारज जगद्गुरु, वन्दौ रामानन्द॥१॥

भोगत कोटिन कल्पलौं, नाहिन नशै मनोज॥
नाहिन नशै मनोज महादुखदायक सोई।
ज्ञानिन को नित शत्रु देत आतम सुख खोई॥
लोभ क्रोध लै संग मोह के जाल फँसावत।
'योगानन्द' सो बचै जाहि गुरुदेव बचावत॥
तजिये कंचन कामिनी, भजिये चरण सरोज।
भोगत कोटिन कल्पलौं नाहिन नशै मनोज॥२॥

जैसे गज गजिनी निरखि, आय परयो अँधकूप॥
आय परयो अँधकूप रूप आपन नहिं जानै।
नहीं सच्चिदानन्द-कन्द रामहिं पहिचानै॥
देह आत्मा मानि खेह निशि वासर खाई।
'योगानन्द' विचारि देखु दुख की अधिकाई॥
विज्ञानी अज्ञान परि, भूल्यो आपन रूप।
जैसे गज गजिनी निरखि, आय परयो अँधकूप॥३॥

त्यो मन बीच विचार कर, विषयन महँ सुख नाहिं॥
 विषयन महँ सुख नाहिं यथा पाथर महँ पंकज।
 पानी मथिय हजार वार नहिं पाइय घृत-रज॥
 भूसी कूटे अन्न मिलै नहिं ऊसर बोये।
 'योगानन्द' नभ गहत वृथा फल बिन दिन खोये॥
 कंचन फूल सुगन्ध नहिं, तेल न बालू माहिं।
 त्यो मन बीच विचार कर, विषयन महँ सुख नाहिं॥4॥

काल व्याल के गाल महँ सब समात छल छन्द॥
 सब समात छल छन्द प्रलय की आँधी आये।
 मनुजन की को कहै कोटि विधि इन्द्र नशाये॥
 जब उपजै अस बुद्धि शुद्धि तब मनकी होई।
 'योगानन्द' नदी प्रवाह उलटावै सोई॥
 यौवन धन गज अश्व रथ, हेम भवन आनन्द।
 काल व्याल के गाल महँ, सब समात छल छन्द॥5॥

प्रात भये आवत दिवस, ऐसेइ जीवन जात॥
 ऐसेइ जीवन जात कमाई करत पापकी।
 पुनि पुनि भोगत नरक विपति सहि त्रिविध तापकी॥
 युवा भयो मद मत्त फिरै हरि नाम न भावै।
 'योगानन्द' गर्वोय जन्म पाछे पछितावै॥
 सौझ भई पुनि रात पुनि, रात गये पुनि प्रात।
 प्रात भये आवत दिवस, ऐसेइ जीवन जात॥6॥
 भूँ जै ज्ञान विचार सब, पेट जानिये भार॥
 पेट जानिये भार पेट सों सब ही हारे।
 जो जीतै यह पेट, जाय सो हरि के द्वारे॥
 भूख भूख चिल्लाय भ्रमत कूकर ज्यों डोलै।

'योगानन्द' सो साधु कहा भव ग्रन्थी खोलै॥

जरत रहत ज्वाला प्रबल झोंकिय अन्न अहार।

भूँ जै ज्ञान विचार सब' पेट जानिये भार॥7॥

मूढ़ वृथा सोचत मरै, जाके नहिं विश्वास॥

जाके नहिं विश्वास पाप करि पेटहिं भरई।

चाहत भव निधि तरन करम कूकर सम करई॥

दृढ़ करि धारै ध्यान तजै तृष्णा अरु आशा।

'योगानन्द' समाधि मध्य सो लखै प्रकाशा॥

जेते घट विधना गढ़ै, तिनहिं भरै अनयासा।

मूढ़ वृथा सोचत मरै जाकै नहिं विश्वास॥8॥

सर्प डसै केहरि ग्रसै, ताहि भलो करि मानि॥

ताहि भलो करि मानि दुष्ट को संग न कीजै।

खल की मीठी बात जहर ज्यों जानि न पीजै॥

घात करै मन लिये ज्ञान अरु ध्यान न भावै।

'योगानन्द' कुसंग साधु को व्याध बनावै॥

दुर्जन की संगति तजौ, दुष्ट संग अति हानि।

सर्प डसै केहरि ग्रसै ताहि भलो करि मानि॥9॥

चंचल वंचक जानिये, मनहिं भूत विकराल॥

मनहिं भूत विकराल, जानि थिर करइ योगसों।

धारि राम छवि ध्यान खैंचि चित विषय भोगसों॥

मानै झूठहिं साँच तासु मन नाम कहावै।

'योगानन्द' सोइ सन्त सकल संकल्प मिटावै॥

कबहुँ जाय आकाश महँ, कबहुँ जाय पाताल।

चंचल वंचक जानिये मनहिं भूत विकराल॥10॥

कोऊ घूँटत धूम मति, देह दर्ई झुरसाय॥

देह दर्ई झुरसाय काम बड़ बाघ न भाग्यो।

विकल होत तिय निरखि ज्ञान को रंग न लाय्यो॥

अन्तर अति अभिमान बात बातन महँ गारी।

'योगानन्द' विचारि भक्ति नव भाँति न धारी॥

कोऊ झूलत अधोमुख, कोउ करि ऊपर पाँय।

कोऊ घूँटत धूम मति, देह दई झुरसाय॥11॥

करनी कतहुँ न देखिये, कथनी आसन मारि॥

कथनी आसन मारि अगुण उपदेश सुनावैं।

शाकत जैनी शैव अघोरी भ्रम फैलावैं॥

आचारिन आचार विवश हरि-भक्ति भुलाई।

'योगानन्द' विचारि कहत कलि की कुटिलाई॥

कलियुग मत बाढे बहुत, दीन्ही भक्ति विसारि।

करनी कतहुँ न देखिये, कथनी आसन मारि॥12॥

तुम जनि भूलों भक्तिरस, रामानन्दी सन्त॥

रामानन्दी सन्त परम निर्मल पथ पाई।

पियहु निरन्तर नाम सुधा रघुपति गुणगाई॥

औरन की लखि भूल तुमहु जनि भूलौ भैया।

'योगानन्द' विचारि देखु जग भूल भुलैया॥

यासों प्रकटे जगत्गुरु, कीन्ह दम्भकर अन्त।

तुम जनि भूलौ भक्तिरस, रामानन्दी सन्त॥13॥

मंथन करि पय तक्र तजि, लह नवनीत अहीर॥

लह नवनीत अहीर लहैं जिमि मधु मधुमाखी।

तैसेइ गहिये सार सकल ग्रन्थन रस चाखी॥

साधन सों धन मिलै लगै जब राम नाम मन।

'योगानन्द' निहारि नयन सच्चिदानन्दघन॥

हंस सार ग्राही गहत, क्षीर तजत सब नीर।

मंथन करि पय तक्र तजि लह नवनीत अहीर॥14॥

प्रीति कीजिये राम सों जिमि पतिवरता नारि॥
 जिमि पतिवरता नारि न कुछु मन में अभिलाषै।
 तैसेइ भक्त अनन्य टेक चातक ज्यों राखै॥
 राम रूप रस त्यागि विषम रस स्वाद न चाखै।
 'योगानन्द' सुजान आन को नाम न भाखै॥
 नेकहि में व्रत नासई, आनकि ओर निहारि।
 प्रीति कीजिये राम सों, जिमि पतिवरता नारि॥15॥

बिरह ज्वाल जा उर जरै, सोई शीतल होय॥
 सोई शीतल होय पिया बिन कुछु नहिं भावै।
 कल न परै दिन रैन नैन घन ज्यों बरसावै॥
 दशरथ राजकुमार ताहि हँसि कंठ लगावत।
 'योगानन्द' जो विरह अनल में अङ्ग जरावत॥
 नैनन नींद न आवई, रहै रैन दिन रोय।
 विरह ज्वाल जा उर जरै, सोई शीतल होय॥16॥

गूँगो संभाषण करै, अरथ बिचारौ मीत॥
 अरथ विचारौ मीत बात गढि गढि जनि छोलौ।
 नाम नाद है लीन नयन भीतर के खोलौ॥
 रज कण मध्य सुमेरु बुन्द में सिन्धु समाई।
 'योगानन्द' चरित्र लखौ करनी हरि भाई॥
 अँधरो देखै लोक सब, बहिरो सुनै सुगीत।
 गूँगो संभाषण करै, अरथ विचारौ मीत॥17॥

चल चल ऊरध पंथ लखु' दिव्यधाम साकेत॥
 दिव्यधाम साकेत जहाँ सियरमण विराजत।
 जहाँ मारुतसुत आदि पारषद सेवक भ्राजत॥
 प्रलय काल नहिं नाश सदा आनन्द अखंडित।
 'योगानन्द' विचारि चलौ ऊरध पथ पंडित॥

मूढ न भटकै नरक महँ कर अपने चित चेत।

चल चल ऊरध पंथ खलु, दिव्यधाम साकेत॥18॥

तौ लौ सन्त महन्त नहिं राम भक्ति रस नाहिं॥

राम भक्ति रस नाहिं ज्ञान सागर गर जैसो।

योगी सिद्ध महर्षि मदन भय सब कहँ तैसो॥

जानि देह सों भिन्न आत्मा है रह न्यारा।

'योगानन्द' विचारि विषय विष विषम विकारा॥

विषय-स्वाद की वासना जौ लौ है उर माहिं॥

तौ लौ सन्त महन्त नहिं राम भक्ति रस नाहिं॥19॥

रघुपति ध्यान तुरीय सुख, ताकी गति अतिझीनि॥

ताकी गति अति झीनि बिना साधन को जानै।

बिन तुरीय अनुभवे राम छवि नहिं उर आनै॥

भक्ति न निर्मल होय मलिनता मिटै न मनकी।

'योगानन्द' विचारि यथा रविपर गति घनकी॥

जागृति स्वप्न सुषुप्ति ये, जीव अवस्था तीनि।

रघुपति ध्यान तुरीय सुख, ताकी गति अति झीनि॥20॥

रघुनन्दनकी झलक लखि, भूलि जात सब योग॥

भूलि जात सब योग लगै जब राम नयन शर।

पुण्य पाप सब जरैं बढै उर विरह निरन्तर॥

कोटि वर्ष तप करै विरह छिनको बढि तासों।

'योगानन्द' बिन मीत हृदय की कहिये कासों॥

प्रेम रंग जेहि अँग लगै, ताहि सुहात न भोग।

रघुनन्दनकी झलक लखि, भूलि जात सब योग॥21॥

राममन्त्र निशिदिन जपहु, करि निर्जन वनवास॥

करि निर्जन वनवास जपहु षट लक्ष षडक्षर।

लागै प्रीति प्रचण्ड देहिं दर्शन सिय रघुवर॥
 श्रीगुरु कृपा प्रताप जनम अरु मरण नशाई।
 'योगानन्द' करु सफल जात यह जीवन भाई॥
 धारि माल तुलसी तिलक, होत राम के दास।
 राममन्त्र निशिदिन जपत, करि निर्जन वनवास॥22॥

निर्मल गति ताकी सकल, उमगै प्रेम प्रभाव॥
 उमगै प्रेम प्रभाव सुगन्ध न दुरै दुराये।
 नहिं ताकै जग-ओर दिव्य लौ रहै लगाये॥
 सरिस मान अपमान सरल चित द्वन्द न ताके।
 'योगानन्द' सोइ मुक्त बसैं उर रघुवर जाके॥
 जाके हिय रघुवर बसहिं, दुरै न तासु सुभाव।
 निर्मल गति ताकी सकल, उमगै प्रेम प्रभाव॥23॥

आवत है बलि देन रिपु भाग भाग रे भाग॥
 भाग भाग रे भाग त्याग माया आसक्ती।
 करि संतत सत्सङ्ग अङ्ग रंगावो भक्ती॥
 फूलै हृदय सरोज भानु निरखै उर माहीं॥
 'योगानन्द' हरि मिलैं गर्भ पुनि झूलै नाहीं॥
 कोटि कल्प बीते कल्पि, जाग जाग अब जाग।
 आबत है बलि देन रिपु, भाग भाग रे भागा॥24॥

जिनके कोटिन शिष्य मम वर एकादश भ्रात॥
 वर एकादश भ्रात कबीरादिक जग जानै।
 जिन कर तेज प्रताप निरखि विधिहू भय मानै॥
 श्रीगुरु आयसु पाय रची वैराग्य पचीसी।
 'योगानन्द' जो पढ़इ लहइ गति शुक मुनि कीसी॥
 श्री श्रीरामानन्द प्रभु जगत्गुरु विख्यात।
 जिनके कोटिन शिष्य मम वर एकादश भ्रात॥25॥